इकाई 9
तुलनात्मक पद्धति

इकाई की रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 सामान्य बोध के साथ संबंध; विचारधारात्मक अवस्थिति के बारे में सवाल करना

9.3 ऐतिहासिक संदर्भ

9.4 तुलनात्मक पद्धति के तत्व

9.5 निष्कर्ष

9.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अध्ययन के उद्देश्य

यह आशा की जाती है कि इकाई 9 को पढ़ने के बाद आपके लिये संभव होगाः

- निष्पक्ष बनाम आत्मपरक, बृहद् बनाम सूक्ष्म, मूल्य-तटस्थता बनाम पक्षपात के परम आवश्यक मुद्दों के संदर्भ में तुलनात्मक पद्धति के महत्व का पता लगाना; तथा
- सामाजिक मुद्दों पर अपनी शोध करने के लिए कुछ सीखें प्राप्त करना।

9.1 प्रस्तावना

निष्पक्ष बनाम आत्मपरक, बृहद् बनाम सूक्ष्म और मूल्य-तटस्थता बनाम पक्षपात के परमावश्यक मुद्दों के बारे में दिशा-निर्देश करते हुए इकाई 9 में सामान्य बोध के साथ तुलनात्मक पद्धति के संबंध और इसकी विचारधारात्मक अवस्थिति के बारे में उठने वाले प्रश्नों की चर्चा की गई है। इसके पश्चात, चूंकि तुलनात्मक पद्धति की अपनी अलग ऐतिहासिक विरासत और गतिरेखा है इसीलिए इकाई लेखिका ने उस ऐतिहासिक संदर्भ की चर्चा की है। जिसमें इस विधि का उदय हुआ। इस पद्धति की गतिरेखा आनुभविक शोध के दौरान चलने वाले तरीक़े से सुसंगत है। इसके बाद इकाई में तुलनात्मक पद्धति की मुख्य विशेषताओं का व्यवस्थित निरूपण किया गया है। पूरी इकाई में, समग्र सैद्धांतिक मान्यताओं, शोध पद्धतियों और क्षेत्र तकनीकों के बीच संबंध पर ध्यान केंद्रित किया गया है। भारत में तुलनात्मक विधि द्वारा किये जाने वाले सामाजिक विज्ञान शोध की पर्याप्त चर्चा की गई है। यह चर्चा आपके अपने शोध में तुलनात्मक पद्धति को लागू करने का ठोस आधार प्रदान करेगी क्योंकि जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि बिना तुलना के समाजशास्त्र ही नहीं हो सकता है। इस इकाई में आपको सामाजिक सरोकारों पर शोध करने के लिए कुछ स्पष्ट सीखें भी मिलेंगी।

9.2 सामान्य बोध के साथ संबंध; विचारधारात्मक अवस्थिति के बारे में सवाल करना

समाजशास्त्र के छात्र-छात्राओं को सामान्य बोध और समाजशास्त्र दोनों के बीच अंतर तथा सामान्य बोध की समझ और समाजशास्त्रीय ज्ञान को एक में तिरोहित कर देने के ख़तरे के बारे में खूब अच्छी तरह से मालूम है (बेते 2002)। तुलनात्मक उपागम पर चर्चा के संदर्भ में सामान्य बोध की बात करना एक बार फिर महत्वपूर्ण बन जाता है। आपको भली-भांति मालूम है कि हमारे रोज़मर्रा के जीवन में तुलना और विषमता का खूब प्रयोग किया जाता है और इसमें कोई अचंभा नहीं है कि मानव समाज और संस्कृति के अध्ययन में

'तुलना और विषमता' का अनुप्रयोग उतनी ही आम बात है। यदि आप अपने आसपास के सामाजिक जगत की रोज़मर्रा की जानकारी के बारे में विचार करें तो आपको अहसास होगा कि आप भी तुलना और विषमता की प्रक्रियाओं में शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हम सभी के द्वारा चीज़ों, लोगों, खाद्य पदार्थों, संस्कृतियों इत्यादि का उनके श्रेष्ठ (बढ़िया) या निकृष्ट (घटिया) होने की सहज गुणवत्ताओं के संदर्भ में मूल्यांकन किया जाता है। "हमारा भोजन उनके भोजन से ज़्यादा स्वादिष्ट है", या "उनकी संस्कृति हमारी संस्कृति की तुलना में ज़्यादा विकसित" है – इस प्रकार की आम टिप्पणियां आमतौर पर सुनने में आती हैं। संस्कृति विशेष के अधिक विकसित होने वाले उपरोक्त दूसरे कथन में विकासवादी पूर्वाग्रह का आभास होता है अर्थात् विकास की अवस्थाएं होती है और प्रत्येक अगली अवस्था पिछली अवस्था से श्रेष्ठ होती है। बहुत समय तक समाजशास्त्र में जंगली के 'सभ्य' के साथ या आदिम (primitive) के साथ आधुनिक की तुलना करना बिल्कुल उचित प्रतीत होता था। समाजशास्त्रियों ने विकासवादी तुलनात्मक पद्धति पर आधारित अंतर्निहित मूल्य निर्णय से बचने के लिए 'सरल' और 'जटिल' समाजों का काफ़ी सोच विचार के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया है। इस संबंध में रोचक बात यह है कि रोज़मर्रा के स्तर पर भी यह जागरुकता आ गई है कि तुलना करना उचित नहीं है और हम प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु या विचार को स्वयं के लिए मूल्यांकित करना है न कि सदा दूसरों से तुलना करके ही देखना है।

आपको स्पष्ट होगा कि तुलनात्मक पद्धति के कुछ प्रकरण दैनिक जीवन की धारणाओं में भी विद्यमान होते हैं। तुलना के प्रति हमारा दिन प्रतिदिन के अनुप्रयोग और समाजशास्त्रीय उपागम में अंतर करना कठिन हो जाता है क्योंकि समाजशास्त्र एवं रोज़मर्रा के जीवन में काफ़ी समीपता का संबंध है तथा दोनों स्तर एक दूसरे के क्षेत्र में आते-जाते रहते हैं। बेते ने दैनिक जीवन में तुलनात्मक और समाजशास्त्रीय तुलनात्मक दृष्टिकोणों के बीच सतर्क और महत्वपूर्ण अंतर बताया है। उसके शब्दों में,

> हालांकि मानव चिंतन की प्रक्रिया में तुलना का व्यापक प्रयोग स्वाभाविक हो सकता है लेकिन यही बात क्रिया-विधि के निश्चित या कम से कम परिभाषित नियमों वाली तुलनात्मक पद्धति के लिए सचेत खोज के बारे में नहीं कही जा सकती है। सामाजिक विज्ञानों में शामिल विभिन्न विषयों के भी लक्षणात्मक अंतर होते हैं। अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान जैसे कुछ विषय अधिकांशतः सार्वभौमिक संरचनाओं और प्रत्येक स्थान पर सारी मानवजाति की सामान्य प्रक्रियाओं पर केंद्रित हैं। इन विषयों ने समाजों के बीच पाए जाने वाले विशेष और लगातार बने रहने वाले अंतरों पर कम ध्यान दिया है। दूसरे विषयों, ख़ासतौर से इतिहास में अपने चुने देश-काल की सीमाओं से दूर जाये बिना समाजों के विशिष्ट लक्षणों का उल्लेख किया जाता है। शोध साधन के रूप में बिना हरेक के विशिष्ट लक्षणों को नज़रअंदाज़ किये सारे समाजों (या संस्कृतियों) के सामान्य लक्षणों को खोजने के लिये सचेतन रूप से तैयार की गई पद्धति ने समाजशास्त्र और सामाजिक नृशास्त्र को विशेष रूप से सम्मोहित किया हुआ है।

इवन्स-प्रिचर्ड (1963: 3) ने अपने एल.टी हॉबहाउस मैमोरियल ट्रस्ट लेक्चर, 33, में तुलना की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि व्यापक अर्थ में देखा जाये तो कोई अन्य विधि है ही नहीं। तुलना सारे विज्ञान की अनिवार्य क्रिया-विधियों में से एक है और यही "मानव विचारधारा की मूल प्रक्रियाओं में से एक है।" इवान्स-प्रिचर्ड के विचारों मे दुर्खाइम के विचारों की गूंज स्पष्ट है। दुर्खाइम (1964: 139) ने लिखा, "तथ्यों का विवरण देने के स्थान पर तथ्यों की व्याख्या करने के रूप में तुलनात्मक समाजशास्त्र तो समाजशास्त्र की एक विशिष्ट शाखा न होकर स्वयंमेव समाजशास्त्र ही है।"

मैक्फ़ार्लेन (2004: 95) ने लिखा कि, "अनेको प्रेक्षकों ने नोट किया कि एक तथ्य को समझने के लिए उसे परिप्रेक्ष्य में रखना या दूसरों के साथ उसकी तुलना करना ज़रूरी है।

मैक्फ़ार्लेन ने लेवी (1950: 9) को उद्धत किया जिसने इसी बात को बहुत पहले कहा था, "एक तथ्य को केवल दूसरे तथ्यों के संदर्भ में समझा जाता है" जिसे केवल इंग्लैंड के बारे में ही मालुम है, उसे इंग्लैंड के बारे में बहुत कम मालूम है"। अतः पश्चिमी संस्कृति को परिप्रेक्ष्य में देखना ही उचित होगा।

अधिकांश सामाजिक वैज्ञानिकों को सामान्यतः यह पता है कि उनका काम हर समय तुलना करना ही है जैसा कि मैक्फ़ार्लेन (2004: 94) ने कहा, "इतिहास में तुलनाएं प्रायः काल के अनुसार की जाती है"। अन्य समाज विज्ञानों में देश के संदर्भ में होती हैं। इतिहासकारों की सबसे सुपरिचित विधि है अपने समाजों को एक प्रतिमान के रूप में लेकर देखना कि पुरातन काल उनसे कितना समान या मिलता है। ऐसा ही नृशास्त्रियों, समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों द्वारा काल की बजाए देश के आयाम में किया जाता है। इसके आगे मैक्फ़ार्लेन ने पोकॉक (1961: 90) को उद्धृत किया, जिसने कहा था, "अनौपचारिक रूप से तुलना शोध की पद्धति में निहित होती है। यहाँ तक कि अपने सर्वप्रथम क्षेत्र-कार्य में हर नृशास्त्री ने प्रायः अपने समाज की श्रेणियों से ही अपने अध्ययन क्षेत्र के समाज की श्रेणियों की तुलना की है...।"

आर लोवी
(1883-1957)

मैक्फ़ार्लेन ने आगे द टोकविल (1861, i: 359) को उद्धृत किया जिसने अपने संस्मरणों में ऐसी ही तुलना विधि का उदाहरण प्रस्तुत किया था

> अमेरिका पर अपनी रचनाओं में हालांकि मैंने फ्रांस का उल्लेख कभी-कभार ही किया। फ्रांस के बारे में सोचे बिना या उसे अपने सामने रखे बिना मैंने एक भी पृष्ठ नहीं लिखा। और मैंने जो निष्कर्ष निकालने या स्पष्ट करने का प्रयास किया वह उस विदेशी समाज की संपूर्ण दशा नहीं थी, उसमें बस वे बातें थी जो हमारे अपने समाज से भिन्न थीं या उससे मिलती-जुलती थीं। मैंने सदैव समानताओं या भिन्नताओं को देखकर ही एक रोचक और सही विवरण दे पाने में सफलता पाई..।

अब तक तो आपको यह स्पष्ट ही हो गया होगा कि अलग-अलग समय पर समाजशास्त्रियों में तुलना और मूल्य निर्धारणों की समस्या के प्रति जागरूकता पैदा हुई। शास्त्रीय, समाजशास्त्रीय चिंतकों और तुलनात्मक उपागम के दुर्खाइम और वेबर जैसे समर्थकों ने इसके बारे में क्या कहा? पश्चिमी समाज अपने विकास की उच्चतम अवस्था पर पहुंच चुके थे – इसे अंदर ही अंदर स्वीकार करने वाली उद्विकासीय प्रगति के संदर्भ में, समाजशास्त्रियों ने मूल्य.तटस्थ समाजशास्त्र की अपनी प्रतिबद्धता और तुलना के साथ अपनी प्रतिबद्धता के बीच द्वंद्व को किस प्रकार सुलझाया? आइए इन प्रश्नों पर हम अगले भाग में चर्चा करें। इकाई का अगला भाग समाजशास्त्र में तुलनात्मक पद्धति के ऐतिहासिक संदर्भ पर आधारित है।

अगले भाग में चर्चा बढ़ाने से पूर्व यह बात ध्यान में रखना उचित होगा कि केवल शास्त्रीय समाजशास्त्रियों को ही तुलना पद्धति के आकर्षण के सामने झुकना नहीं पड़ा बल्कि प्राचीन विद्वानों में हेरोडोटस, अरस्तू, पॉलिटिक्स, प्लूटार्क जैसे विचारकों और पुनर्जागरण के बोडिन तथा मेक्यिावेली ने भी इसका प्रयोग किया। आप भी ऐसे विद्वानों की एक लंबी सूची तैयार करें जिन्होंने शास्त्रीय समाजशास्त्रियों द्वारा तुलनात्मक उपागम के अनुप्रयोग से प्रेरणा ली और विभिन्न समाजों और संस्कृतियों की समृद्ध जानकारी प्राप्त की। मैक्फ़ार्लेन (2004: 108) ने अपनी ऐसी सूची में पैरी एंडरसन, फर्नांड ब्राडेल, लुई दुमों, अर्नेस्ट गैलनर, जैक गुडी, ई. एल. जोन्स, डेविड लैंडस और विलियम मैक्नील के नामों को शामिल

किया। समकालीन समाजशास्त्रियों जैसे आंद्रे बेते ने तुलनात्मक पद्धति के अनुप्रयोग को जारी रखने के लिए ज़ोर दिया, हालांकि साथ में पहले के समाजशास्त्रियों द्वारा की गई ग़लतियों से बचने की ओर भी उसने पूरा ध्यान दिया। इस नज़रिये से आपको सीख मिलती है कि तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग करने के बारे में विभिन्न विवादों में पड़ने की संभावनाओं से बचते हुए पर्याप्त सावधानी के साथ इसको देखें।

9.3 ऐतिहासिक संदर्भ

हालांकि प्राचीन और मध्यकालीन विद्वानों ने अपनी अपनी कृतियों में तुलनाओं का प्रयोग किया लेकिन सामाजिक शोध की निर्दिष्ट विधि के रूप में तुलनात्मक पद्धति उन्नीसवीं शताब्दी के समाजशास्त्र और सामाजिक नृशास्त्र की उपज थी। उन्नीसवीं शताब्दी में तुलनात्मक पद्धति का प्रमुख आकर्षण इस मान्यता से आया कि मानव समाज और संस्कृति के बारे में वैज्ञानिक नियमों को खोजने के लिए भी इसका प्रयोग किया जा सकता है। तुलनात्मक पद्धति के सबल समर्थकों का समाज के ऐसे प्राकृतिक विज्ञान की संभावना में विश्वास था जो व्यवस्थिति तुलनाओं के माध्यम से सामाजिक जीवन के रूपों में सहअस्तित्व और अनुक्रम की नियमबद्धताएं स्थापित करेगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उन्नीसवीं शताब्दी में समाजशास्त्र और नृशास्त्र के तहत् सामाजिक और सांस्कृतिक तथ्यों के अध्ययन में मानव जीवन के भौतिक या जैविक पहलुओं का अध्ययन भी शामिल था।

फ्रांस में दुर्खाइम, इंग्लैंड में हर्बर्ट स्पैंसर और जर्मनी में मैक्स वेबर जैसे प्रारंभिक समाजशास्त्रियों ने माना कि तुलना मानव जाति की विचार करने की मूलभूत प्रक्रियाओं में से एक है। स्पैंसर (1876 और 1895 के बीच प्रकाशित प्रिंसिपल्स ऑफ़ सोशियोलोजी के प्रथम खंड का अध्याय II देखें) और दुर्खाइम (1895 में प्रकाशित दि रूल्स ऑफ़ सोशियोलोजीकल मैथड के अध्याय V और VI देखें), दोनों ही जैव सादृश्य (organic analogy) से अत्यधिक प्रभावित थे। विशेषतः दुर्खाइम ने सामाजिक जगत को समझने के लिए तुलनात्मक दृष्टिकोण निर्मित करने में जैव सादृश्य का शोध-पद्धतिजनक प्रयोग विकसित किया। दुर्खाइम द्वारा तुलनात्मक विधि के व्यवस्थित प्रयोग ने बीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में समाजशास्त्र और सामाजिक नृशास्त्र में इसके व्यापक प्रयोग को बढ़ावा दिया विश्व के विभिन्न हिस्सों में शोधों में इस मूल्यवान पद्धति के अनुयायियों के रूप में रैडक्लिफ़-ब्राउन और उसके सभी साथियों के नामों का उल्लेख किया जा सकता है। तुलनात्मक पद्धति पर आलोचनात्मक टिप्पणी के लिए कोष्ठक 9.1 देखें।

कोष्ठक 9.1: तुलनात्मक पद्धति पर समीक्षात्मक टिप्पणी

निस्संदेह समाजशास्त्रियों और नृशास्त्रियों ने विद्वतापूर्व कृतियों की एक समृद्ध श्रृंखला दी। इनमें सामाजिक प्रचलनों और संरचना के बीच संबंध की तुलना तथा विरोध दिखाये गये। अधिकांश सामाजिक शोधों में समाज के बारे में एक विशेष अवधारणा ली गई थी। इसका मत था कि समाज स्वजातिक (sui generis) यथार्थता है और बाहर से इसका अवलोकन किया जा सकता है और फिर उसीका निष्पक्ष रूप से वर्णन किया जा सकता है। इनगोल्ड (1990: 6) ने समाज की इस अवधारणा की उपयोगियता पर सवाल उठाया और कहा कि इस पद्धति के प्रयोग की अति ने समाजशास्त्र में तुलनात्मक पद्धति से अनेक अपेक्षाएं पैदा कर दी थीं लेकिन इसका असमीक्षात्मक प्रयोग ही तुलनात्मक विधि की असफलता के लिये उतारदायी है।

तुलनात्मक पद्धति के बारे में मैक्स वेबर के दृष्टिकोण ने एक अलग रास्ता अपनाया क्योंकि सामाजिक तथ्यों के कारणों और प्रकार्यों की खोज करने के साथ समाप्त होने वाले समाजशास्त्रीय शोध से मैक्स वेबर को कोई सहानुभूति नहीं थी। वेबर को सामाजिक तथ्यों के अर्थों से अधिक सरोकार था। वेबर (1949: 15) का कथन है, "घटक व्यक्तियों के बारे

मैक्स वेबर
(1864-1920)

में आत्मपरक जानकारी प्राकृतिक विज्ञान में हमें कभी भी नहीं मिल सकती है।" तुलनात्मक पद्धति का प्रारंभिक प्रयोग केवल समाज के प्राकृतिक विज्ञान की विचारधारा से ही नहीं बंधा था बल्कि साथ में यह ज़्यादा स्पष्ट रूप से विकास के सिद्धांत से आबद्ध था। उन्नीसवीं शताब्दी के नृशास्त्र का एक बड़ा हिस्सा सामाजिक प्रतिरूपों के उद्गमों से और पुनःनिर्माण की उन अवस्थाओं से संबद्ध था जिनसे गुज़र कर वे सरलतम से जटिलतम रूपों में विकसित हुए।

एक ओर मूल्य-तटस्थ और निस्पक्ष उपागम और दूसरी ओर स्पेंसर, एमिल दुर्खाइम और मैक्स वेबर जैसे प्रारंभिक समाजशास्त्रियों पर विकासवादी उपागम के प्रभाव के बीच होने वाले तनाव पर टिप्पणी करते हुए बेते (2004: 114) ने कहा,

> उनका मानना था कि समाज, संस्कृति, धर्म, परिवार, विवाह इत्यादि ने हर जगह मानव जीवन को आकार प्रदान किया और इन्होंने न केवल देश में बल्कि विदेश में भी गंभीर व बौद्धिक रूप से ध्यान आकर्षित किया। इस अर्थ में, तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग करने वालों से अपने समाज एवं संस्कृति से एक प्रकार की तटस्थता की अपेक्षा होती है। ऐसी अपेक्षा ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग करने वालों द्वारा नहीं की जाती। कई इतिहासकार महाराष्ट्रवादी रहे हैं। चूंकि तुलनात्मक पद्धति, विशेषाधिकार प्राप्त अपवादों को कम से सैद्धांतिक रूप से तो स्वीकार नहीं करती, अतः यह इतनी आसानी से खुल्लमखुल्ला राष्ट्रवाद की भावना को स्वीकार नहीं कर सकती। समाजशास्त्र और सामाजिक नृशास्त्र में तुलनात्मक पद्धति के अग्रणी विद्वान विकास के सिद्धांत से चाहे थोड़ा या ज़्यादा प्रभावित तो अवश्य थे। वस्तुतः यह विकास की अवस्थाओं की खोज थी जिसके दौरान स्पेंसर और मार्गन की तुलनात्मक विधि उजागर हुई। इससे कुछ सीमाएं बंध गईं जिन तक ये विद्वान सभी समाजों और संस्कृतियों को समान मूल्य दे सकते थे। यह मौन रूप से स्वीकार किया गया कि पश्चिमी समाज विकास की उच्चतम अवस्था तक पहुंच चुके हैं और अन्य सभी समाज उनके नीचे क्रमिक दूरी पर खड़े हैं।

इन निर्धारित मतों को चुनौती देने के लिए पश्चिमी जगत से बाहर कोई आवाज़ नहीं उठी। तुलनात्मक पद्धति की आकांक्षाओं और उसकी उपलब्धियों के बीच शुरुआत से ही एक अंतरात था। जैसा कि आपको इकाई 10 और 11 में स्पष्ट होगा कि महिलावादी और सहभागी दृष्टिकोण बहुत आधारभूत रूप से मूल्य-तटस्थता की मान्यता को विचलित करते हैं और साथ ही तर्क देते हैं कि प्रभावी वर्ग के परिप्रेक्ष्य ही विश्व व्यापक और तटस्थ मतों के रूप में मान लिये गये हैं। उदाहरण के लिए उन्नीसवीं शताब्दी के विशेषाधिकार प्राप्त श्वेत पुरुष विद्वानों के विचार निश्चित रूप से सार्वभौमिक ज्ञान के रूप में मान्य हुए (देखें इकाई 4)। इस अर्थ में तुलनात्मक दृष्टिकोण की उत्पत्ति उन महिलावादी और सहभागी दृष्टिकोणों से अत्यंत भिन्न है जिनका प्रभाव सामाजिक विज्ञान शोध में हाल में पड़ा है और जिनकी मान्यता मूल्य-तटस्थता के विचार से बहुत अलग है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि महिलावादी और सहभागी उपागमों द्वारा उठाए गए प्रश्नों ने तुलनात्मक पद्धति के मुख्य पालनकर्ताओं अर्थात् सामजशास्त्र तथा सामाजिक नृशस्त्रि को गहराई से प्रभावित किया है।

आइए, अपनी चर्चा पर वापिस आते हुए देखें कि वेबर और दुर्खाइम के बारे में बेते (2004: 127) ने क्या कहा है,

> वे जानते थे कि वर्ग या राजनीतिक संबंध के अनुसार विचारों में भिन्नता हो सकती है लेकिन उन्होंने राष्ट्रीय परंपरा के अंतरों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। उन्होंने ग़ैर-

पश्चिमी समाजों के विचारों और मूल्यों को ध्यान में रखा लेकिन केवल शोध के विषय की भांति ही, न कि शोध-पद्धति निर्माण के अवयवों के रूप में। एशियाई और अफ़्रीकी देशों के विद्वानों के लिए यह तथ्य चिंता का स्रोत बना है।

बेते (2004: 127) ने महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया कि क्या विभिन्न भौगोलिक स्थानों में बसे हुए व्यक्तियों के अवलोकन, विवरण और तुलना के लिए विभिन्न विधियों का परामर्श देने से इस कमी को दूर किया जा सकता है? शायद इसका उत्तर 'नही' है। फिर भी अपने अपने अध्ययनों की शुरुआत में ही अपनी अपनी अवस्थितियों (locations) अर्थात् राष्ट्र, लिंग, जाति, यहाँ तक कि सैद्धांतिक अभिरुचियों को यदि समाजशास्त्री स्पष्ट रूप से व्यक्त करें तो उनके लिये शोध पद्धतिजनक सुदृढ़ता को स्थापित करना संभव होगा। तब उनके पाठकों के लिये समाजशास्त्रीय अध्ययनों की आंतरिक सम्बद्धता तथा उनकी प्रधान मान्यताओं का आलोचनात्मक परीक्षण करना सरल होगा।

एक अन्य स्तर पर, जोकि तुलनाओं की संख्या और प्रकृति का स्तर है, यह सुझाव दिया गया है कि हम द्विआधारी (binary) चिंतन न करें और विश्लेषण की युग्तीय (dyadic) प्रणाली का प्रयोग न करें। एक युग्म या जोड़े की तुलना में, उदाहरण के लिए भारत और इंग्लैंड या पश्चिमी देश और शेष देशों की तुलना करते हुए निश्चित रूप से इन युग्मों में से एक को दूसरे से बेहतर/श्रेष्ठ/ऊंचा कहा जायेगा। मैक्फ़ार्लेन (2004:103) ने एक आदर्श प्रारूप की तरह लेते हुए सामंतवाद पर बर्क द्वारा की गई टिप्पणी का हवाला दिया और कहा कि फ्रांसीसी सामंतवाद को 'सटीक' और 'सामंतवाद' के अन्य सभी रूपों को विचलनों के रूप में देखा गया है। बर्क ने इस मान्यता पर सवाल उठाया और पाया कि ऐसा इसलिए है क्योंकि पश्चिमी विद्वानों ने अपने अपने समाजों के बिंबों के आधार पर ही समाजशास्त्र की अधिकांश अवधारणाओं को उजागर किया है। मैक्फ़ार्लेन ने त्रिकोणीय तुलना के लिए तर्क प्रस्तुत किये हैं (देखें कोष्ठक 9.2)।

कोष्ठक 9.2: त्रिकोणीय तुलना के लिए मैक्फ़ार्लेन का सुझाव

मैक्फ़ार्लेन (2004) ने वास्तविक, ठोस, ऐतिहासिक तथ्यों की सुस्पष्ट त्रिकोणीय तुलना का सुझाव दिया। लेकिन ये सभी वेबर के आदर्श प्रकारों के पृष्ठपट की छाया में निर्धारित किए गए क्योंकि तभी त्रिकोणीय तुलनाएं करना संभव हो पाता है।...

त्रिकोणीय विधि को दो तथ्यों और एक आदर्श प्रारूप से तीन तथ्यों और एक आदर्श प्रारूप तक बढ़ाने से हमारे लिये सापेक्षवाद और सारवाद (essentialism) की उन समस्याओं से पार पाना संभव है जिन्होंने पिछले डेढ़ सौ वर्षों से भी अधिक समय से समाजशास्त्र को घेरा हुआ है। हमारे लिये ऐसी स्थिति की ओर बढ़ना संभव है जहाँ लोगों में समानताओं पर ज़ोर देने के साथ-साथ उनकी अद्भुतताओं और अंतरों का आनंद उठाना संभव हो सकता है।

आइए, तुलनात्मक दृष्टिकोण की चर्चा के इस बिंदु पर सोचें और करें 9.1 पूरा करें ताकि आप सामाजिक जगत के अपने अध्ययन में तुलनात्मक दृष्टिकोण लागू करने की समस्या तथा इसके महत्व को समझने में निहित मुद्दों को पूरी तरह ग्रहण कर सकें।

सोचे और करें 9.1

निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार कीजिए और उनसे संबंधित प्रश्नों का उत्तर दीजिए

उदाहरण

- सर हेनरी मेन ने भारत और यूरोप के बीच तुलना की।
- मार्क्स ने उत्पादन की विभिन्न प्रणालियों के बीच तुलना की।

- मैक्स वेबर ने यूरोप के प्रौटेस्टैंट और कैथोलिकों के बीच तुलना की और इस्लाम, हिन्दुवाद और कन्फ्यूशनवाद जैसे धर्मों की तुलना में यूरोप की विषमता को दर्शाया।

प्रश्न

- उपर्युक्त विषमताओं और तुलनाओं में कौन सा एकमात्र घटक अग्रवर्ती घटक के रूप में प्रमुख रूप से दृष्टिगत होता है?
- क्या उपर्युक्त उदाहरण मुख्यतः विषमता के या तुलना के हैं?
- क्या ऐसी विषमताएं द्विपक्षीय विरोध के उदाहरण हैं?
- क्या बहुत ज़्यादा अंतर वाले समाजों के बीच तुलना करने की बजाय किसी प्रकार की समानताओं वाले समाजों के बीच तुलना करना बेहतर है? उदाहरण के लिये भारत और यूरोप के बीच तुलना करने की जगह क्या यह बेहतर नहीं है कि इंग्लैंड और जापान के बीच तुलना की जाये? इंग्लैंड और जापान के बीच समानताओं तथा अंतरों के बिंदुओं को प्रकाश में लाइए।

9.4 तुलनात्मक पद्धति के तत्व

पिछले भाग में तुलना और निष्पक्ष निर्णय के नियम के बीच आने वाली समस्याओं पर समीक्षात्मक टिप्पणियों के बावजूद समाजशास्त्र में तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग बहुत स्वाभाविक तौर पर किया गया है। इसकी कुछ विशेषताओं का योजनाबद्ध रूप से नीचे उल्लेख किया जा रहा है।

- समाज के प्राकृतिक विज्ञान की संभावना में आस्था
- तटस्थता के लक्ष्य और उद्विकास के सिद्धांत के बीच असुविधाजनक संबंध
- जैव सादृश्य (organic analogy) का प्रभाव
- व्यवस्थित तुलनाएं करने का इरादा

हालांकि समाजशास्त्रियों ने प्रथम तीन विशेषताओं पर काफ़ी तर्क-वितर्क किया लेकिन फिर भी उन्होंने व्यवस्थित तुलनाओं के इरादे के प्रति काफ़ी श्रद्धा दिखाई है।

इसी कारण से इस पद्धति के निम्नलिखित तत्वों पर ध्यान देना अनिवार्य है।

- तुलना की विधियाँ
- तुलना की इकाइयाँ
- तुलनात्मक पद्धति का लक्ष्य

आइए प्रत्येक तत्व पर विस्तार से चर्चा करें ताकि अपने शोध में तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग करने हेतु हमें कुछ उपयोगी बातें मालुम हो सकें।

i) तुलना की विधियाँ

जैसा कि मैक्फ़ार्लेन (2004:99) ने नोट किया, तुलना अनेकों तरीक़ों से की जा सकती हैं, व प्रत्येक तुलना अपने कार्य के अनुरूप की जाती है और पहले से ही या निर्धारित नहीं किया जा सकता है कि कौन सी विधि सर्वश्रेष्ठ होगी। अधिक से अधिक कुछ विकल्पों को प्रस्तुत किया जा सकता है। आइए देखें कि दुर्खाइम (1964) ने तुलना की किन तीन विधियों को बताया है।

क) विशेष समय में केवल एक समाज की ही चर्चा हो सकती है और उस समाज के कार्य के विशिष्ट तरीक़ों या संबंधों में पाये जाने वाले अंतरों का विश्लेषण किया जा सकता है।

ख) समान प्रकृति वाले ऐसे कई समाजों की चर्चा की जा सकती है जिनकी कार्य विधियों या संबंधों में अंतर हो। अधिक स्पष्ट रूप से कहें तो असमान और संभवतः समकालीन समाजों की तुलना की जा सकती है अथवा यदि विभिन्न कालों में कुछ सीमा तक सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हों तो एक ही समाज को अलग-अलग कालों में देखा जा सकता है।

ग) ऐसे अनेक समाजों की तुलना की जा सकती है जिनके स्वरूप में व्यापक रूप से अंतर होने के बावजूद कुछ समरूपी विशेषताएं हों। इसी प्रकार एक ही समाज के जीवन में विभिन्न कालों में आमूल परिदर्तन दृष्टिगत हो तो उनकी तुलना भी की जा सकती हैं।

ii) तुलना की इकाइयाँ

मैक्फ़ार्लेन (2004: 100) के शब्दों में तुलना पद्धति की सफलता उन्हीं चीज़ों की तुलना पर निर्भर करती है जिनकी तुलना की जा सकती है। इसके अंतर्गत कई विशेषताएं आती हैं। उनमें से एक है कि तुलना की जाने वाली इकाइयाँ लगभग एक ही महत्ता की हों, उदाहरण के लिए इंग्लैंड में अभिवादन करने के तरीक़े की तुलना चीन की परिवार प्रणाली से करना तनिक भी लाभप्रद नहीं होगा।

आगे, मैक्फार्लेन ने कहा, द्वितीयतः, प्रभावी तुलना के लिए चीज़ें किसी न किसी रूप में एक ही वर्ग या क्रम की होनी चाहिए। इस प्रकार अमेरिका में विवाह की तुलना चीन की चाय पीने की पद्धति से करना संभवतः निरर्थक ही होगा। तुलनाओं का चयन काफ़ी महत्वपूर्ण है। कभी-कभी एक समान दिखने वाली चीज़ों का चयन करने पर भी धोखा हो सकता है। 'नगर', 'विवाह', 'परिवार', 'क़ानून' जैसे शब्दों में नाना-प्रकार की नृजाति विवरण शास्त्रपरक मान्यताएं भरी पड़ी हैं। यहाँ तक कि 'घर', 'आहार', 'शरीर' जैसे स्पष्ट शब्दों में भी प्रत्येक संस्कृति में पाई जाने वाली मान्यताओं का जटिल समुच्चय मिलता है। अतः तुलना के लिये इकाइयों का चयन करते समय सचमुच ही काफ़ी सतर्कता की आवश्यकता होती है।

iii) तुलनात्मक पद्धति का लक्ष्य

सामाजिक वैज्ञानिकों ने अपने शोध के उपकरणों में से तुलनात्मक पद्धति को मात्र एक उपकरण माना है। हर शोधकार के लिये यह जानकारी आवश्यक है कि उसे किसी भी विशिष्ट उपकरण का प्रयोग क्यों करना है, उसका क्या उद्देश्य है और कैसे अच्छी तरह उस उपकरण का उपयोग किया जाये। इस संबंध में, मैक्फ़ार्लेन का सुझाव है: i) सुपरिचित से फ़ासला रखने में, ii) अपरिचित से परिचित होने में, और iii) अदृश्य को उज़ागर करने में बड़ा फ़ायदा है। आइए, तीनों को थोड़ा विस्तार से समझें।

सुपरिचित से फ़ासला रखना

सुपरिचित से फ़ासला रखने या स्पष्ट को अस्पष्ट में बदलने का अर्थ है स्वयं और जानी-पहचानी चीज़ों के बीच में दूरी रखना ताकि शोधकार उन्हें भिन्न दृष्टिकोण से देख सके। अधिकांश शोधकारों के सामने प्रायः सुपरिचित का न देखने की समस्या आती है क्योंकि उनके लिये सुपरिचित तो 'ऐसा होता ही है' की श्रेणी में रहता है। पीने के पानी वाले गिलास के किनारों को न छूना – भारतीयों के लिये आम बात है परंतु विदेशियों के लिये यह ख़ास बात हो सकती है। समाजशास्त्र में सामान्य बोध के बारे में प्रश्न करना सिद्धांत के क्षेत्र में आता है और यथार्थ के जो स्वरूप हमें स्वाभाविक लगें वही बहुधा समाजशास्त्रीय दृष्टि से सिद्धांत निर्माण में महत्वपूर्ण हो जाते है।

अपरिचित से परिचित होना

अपने कार्य के दौरान हमें कई ऐसी चीज़ें दिखाई देती हैं जिनके बारे में हमें जानकारी ही नहीं होती है और उनके तर्क तक हमारी पहुंच नहीं होती या ये हमारी समझ में नहीं आते। यह भी काफ़ी समस्यापूर्ण विषय है। ऐसे में प्रायः या तो विषय को पूरी तरह छोड़ देने का प्रलोभन होता है या अविवेकी और निरर्थक कहकर उसके बारे में सोचना ही बंद कर दिया जाता है। दूसरे समाजों पर अन्य लोगों द्वारा किए गए अध्ययनों के ज़रिए ऐसी समस्या का हल एक तरह से अब 'ज्ञात' है। उदाहरण के लिये पश्चिम में रक्त-प्रतिशोध और जादू-टोने जैसे कौतूहलपूर्ण तथ्यों का जब इतिहासकारों ने अध्ययन किया तो इनको समझने में उन्हें ऐसे तथ्यों के नृशास्त्रीय अध्ययनों से बहुत उपयोगी अंतर्दृष्टियाँ मिली।

अदृश्य को उजागर करना

तुलनात्मक विधि से हमें अदृश्य को उजागर करने में मदद मिलती है। शोध के दौरान आपको सदैव यह पता लगेगा कि कई रोचक बातें प्रायः वे होती हैं जो दिखाई नहीं देती और इनसे अवगत होना इतना आसान भी नहीं है। मैक्फार्लेन (2004: 97) ने रॉबर्ट स्मिथ (1983: 102) का उदाहरण दिया जिसने बताया कि एक जापानी विद्वान से पूछा गया कि आधुनिक जापान में पूर्वजों की पूजा अभी भी क्यों प्रचलित है। जापानी विद्वान ने उत्तर दिया कि 'यह बड़ा नीरस सवाल है। असली सवाल तो यह है कि पश्चिम में यह क्यों लुप्त हो गई।' स्पष्ट है कि दोनों ही प्रश्न रोचक हैं और हर शोधकार को अपनी दृष्टि से अदृश्य को उजागर करने की लालसा होती है।

इस रुचिकर भाग के अंत में, आइए अब सोचें और करें 9.2 को पूरा कर लें।

सोचें और करें 9.2

क) दुमोंट (1986:234) ने कहा, "मूल्यों की ठोस और पर्याप्त तुलना केवल उन्हीं दो प्रणालियों के बीच संभव है जो अपने आप में संपूर्ण हैं।" तुलनात्मक पद्धति के इस दृष्टिकोण के आधार पर सफलतापूर्वक तुलना करने के लिए सामाजिक संबंधों की कम से कम पाँच प्रणालियों के नाम बताइए।

ख) अपरिचित के बारे में परिचय पाने में तुलनात्मक पद्धति किस तरह मदद करती है? बर्गेस (1982: 217) ने गणितज्ञ जी. पोल्या को उद्धृत किया जिसका सुझाव था कि किसी भी समस्या को सुलझाने के लिये हम अपनी स्मरणशक्ति को टटोलें कि ऐसी ही कोई समान समस्या मिले जिसका हल हमें मालुम है ताकि उसकी मदद से अपरिचित को समझा जा सके। ऐसे निराले तथ्यों के अध्ययनों के उदाहरण दीजिए जिनसे शोधकारों के अपने क्षेत्रों में समस्याओं को समझने में मदद मिली। अपने रोज़मर्रा के जीवन से ऐसे अनुभवों के उदाहरण दें।

ग) विषमता और तुलना के बीच क्या अंतर है? यह तो स्पष्ट है कि ये दो अलग-अलग प्रक्रियाएं हैं। उदाहरणों के साथ इन अंतरों को समझाइये।

9.5 निष्कर्ष

इस इकाई में विषमता दिखाने और तुलना करने की संक्रियाओं में शामिल जटिल मुद्दों पर चर्चा करते हुए, हमने तुलनात्मक पद्धति के अनुप्रयोग के इतिहास पर विंहगम दृष्टि डाली। साथ में, हमने तुलनात्मक पद्धति को उन साधनों में से एक साधन के रूप में देखा जिनका प्रयोग सामाजिक वैज्ञानिकों ने सामाजिक वास्तविकताओं की अपनी व्याख्या को सुदृढ़ करने के लिये किया है।

9.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बेते, आन्द्रे. 2002. *सोशियोलॉजीः एसेज़ आन अप्रोच एंड मैथड।* आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; नई दिल्ली (समाजशास्त्र विषय के स्वरूप और सामाजिक जगत के अध्ययन हेतु समाजशास्त्रियों द्वारा प्रयुक्त पद्धतियों पर निबंधों के लिए देखें)

बेते, आन्द्रे. 2004. कंपेरिटिव मैथड एंड स्टैंड पॉइंट ऑफ़ द इन्वैस्टीगेटर। विनय कुमार श्री वास्तव (संपादित) *मैथेडॉलॉजी एंड फ़ल्डिवर्क,* ऑक्सफोर्ड यूनि. प्रैसः नई दिल्ली में पृष्ठ संख्या 112-131

इवन्स-प्रिचर्ड, ई.ई. 1963. *दि कंपेरिटिव मैथड इन सोशल एंथ्रोपोलॉजी।* एल. टी. हॉबहाउस मैमोरियल ट्रस्ट लेक्चर, 33